REVIEW OF RESEARCH
ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF)
VOLUME - 11 | ISSUE - 10 | JULY - 2022

अमृतलाल नागर के उपन्यासों में आधुनिकता बोध

डॉ. पुष्पराज लाजरस
प्रभारी प्राचार्य,शासकीय नवीन महाविद्यालय, पाली, जिला कोरबा (छ.ग.)

सारांश –

प्रसिद्ध साहित्यकार अमृतलाल नागर बीसवीं सदी के जानेमाने रचनाकारों में से एक हैं। इन्होंने लेखन की शुरूआत पत्रकार के रूप में की थी, तथा एक सक्रिय लेखक के रूप में भारतीय फिल्म उद्योग में 07 वर्षों तक कार्य किया। ऑल इण्डिया रेडियो में नाट्य निर्माता के रूप में सन् 1953 से लेकर 1956 तक कार्य किया। इनकी प्रभावी रचनाओं के कारण इन्हे साहित्य अकादमी पुरस्कार, पद्म भूषण जैसे प्रसिद्ध पुरस्कारों से सम्मानित किया गया। प्रस्तुत लेख में लेखक के विभिन्न उपन्यासों में वर्णित चरित्रों के माध्यम से तत्कालीन समाज की दशा व दिशा के विशलेषण का प्रयास किया गया है। यह लेख अमृतलाल नागर के विभिन्न उपन्यासों में आधुनिकता बोध को तलाशने का प्रयास है।

रचनाकार खुद अकेला नहीं चलता। वह अपने साथ उस परिवेश को भी लेकर चलता है जिसमें वह जीता रहता है या उसके प्रतिछवि पात्र भोगे रहते हैं रचनाकार के लिए यह अत्यंत आवश्यक भी होता है। कृति को अधिक से अधिक प्रामाणिक और विश्वसनीय बनाने के लिए वह काल विशेष की मूलभूत विशेषताओं को रचना में उतार देता है यही विश्वसनीयता आज के आधुनिक युग के सांस्कृतिक के परिवेश, सामाजिक गठन, वर्गीय विभेद तथा राजनीतिक व्यवस्था को खुलेआम दर्शाती है।

इस दृष्टि से नागर जी की पात्र सृष्टि अद्‌भूत है। वे समाज से ऐसे पात्रों को चुनते हैं जिन्हें पढ़कर पाठक विस्तृत दुनिया के प्रति चौकन्ना हो जाता है। नागर जी के इस कौशलता को डॉ. रामविलास शर्मा अपने शब्दों में व्यक्त करते हुए लिखते है– पात्रों की संख्या, उनकी विविधता अनुकरण अथवा प्रतिछवि की सजीवता के विचार से अमृतलाल नागर हमें ऐसे जीते–जागते और कोलाहलमय संसार में ला खड़े करते हैं जिसके समृद्धि की तुलना बाल्जाक की रचनाओं से ही हो सकती है। लेखक के पास ऐयारी की ऐसी झोली है जिसमें पात्रों को सैकड़ों मूर्तियाँ भरी हुई है और वह संतुलन का भी विचार न करके उन्हें मानंद एक के बाद एक निकालता चला जाता है फिर भी झाली खाली नहीं होती। पात्र अकेले नहीं आते, दि अपने साथ अपना पूरा वातावरण लाते हैं– ''पुरानी हवेली, पीपल के नीचे का चबूतरा, नदी का किनारा इत्यादि।'' इस प्रकार नागर जी का रचना लोक इन तमाम विचारों से भरा है। इसको पढ़कर पाठक अवाक होकर उनके कौशल को देखता है। उन्होंने सिर्फ पुरुष पात्रों को ही नहीं गढ़ा है, उनके उपन्यासों में नर के साथ नारी पात्र भी है। वैसे कोई भी रचनाकार इस बात की चिंता नहीं करता कि उसके पात्र केवल नर ही हो या नारी ही हो। यह तो उसके जीवन अनुभवों पर निर्भर होता है। समाज के जितने व्यापक अनुभव होंगे, उतनी ही व्यापकता पात्रों में परिलक्षित होगी। नागर जी में यह व्यापकता है जिसे उन्होंने अपने उपन्यासों में समाप्ति किया है।

नागर जी का प्रथम उपन्यास 'महाकाल' में अकाल की मार से झखोले खाए निम्न मध्यवर्गीय लोगों की कहानी है। उपन्यास का प्रमुख पात्र पाँचूगोपाल का भाई शीबू पेट भरने के लिए अपनी पत्नी को बेचना चाहता है, उसकी मां जब इस हेय कृत्य के लिए मना करती है तो वह उसे अपनी संपत्ति बताकर उस पर अपना अधिकार जताता है। ''ये मेरी वस्तु है, मैं इस बेचूंगा मुझे मुख लगी है, चावल ला।'' शीबू के इस अत्याचार के लिए उसकी पत्नी क्षमा नहीं करती, बल्कि मध्यवर्गीय नैतिकता को तिलांजलि देकर उसके मुँह पर तमाचा मारती है। नागर जी ने इस घटना को बहुत ही स्वाभाविक प्रतिक्रिया रूप में चित्रित किया है।

अपने प्रथम उपन्यास में ही नारी पात्र का इतना उत्कर्ष दर्शाया है, उतना ही श्लाघनीय है पाँचू गोपाल का चरित्र वह शोषकों से शोषित लोगों को बचाना चाहता है। रास्ते में मिले अनाथ बच्चे को अपनी पत्नी के हाथों में देते हुए वह कहता है कि ''हमारा बलिदान, हमारी कर्मठता और हमारी क्रांति इस बच्चे की दुनियां को इंसान के रहने योग्य बनायेगी, जिसमें अमीर, गरीब न होगें, रंगभेद न होगा, धर्म भेद न होगा, जातीयता और राष्ट्रीयता न होगा, एक दुनिया होगी, एक मानव समाज होगा।''

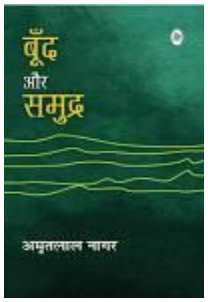

'बूंद और समुद्र' में महिपाल की अद्‌भुत सष्टि है। वह एक साहित्यकार होकर आधुनिक व्यवस्था को अत्यंत कठोर शब्दों में टोकता है। होंगी, मक्कार समाजवादियों को खुलेआम भद्दी गालियों से बौछारता है। डॉ. शीला ने, महिपाल से पढ़ी–लिखी स्त्रियां स्वतंत्र है कहने पर महिपाल कहता है– ''मुट्ठी भर आज भी स्मरणीय है। औरतें आजाद है, जिनमें से एक तुम हो जो बत्तीस रुपया फीस कमा लेती हो मगर बहुतायत तो उन्हों स्त्रियों की है जिन्हें जल–जल कर मरने के लिए मजबूर होना पड़ता है।'' इस उपन्यास में नागर जो ने ताई जैसी नारी पात्र का भी निर्माण किया है जो आधुनिक समाज में सब कुछ रहकर भी नाखुश रहती है। सारे मुहल्ले में नानी, लोगों पर जादू–टोना कर उनका अहित सोचती रहती है। ताई से अलग और विशिष्ट 'नाच्यौ बहुत गोपाल' की 'निगुनिया' है। वह अपने जीवन संघर्षों से जूझकर अपने समाज से चिढ़ती नहीं है, चिढ़ाती भी नहीं है। वरन् उसमें पूरी जिजीविषा के साथ जीना चाहती है। मेहतर मोहना से शादी कर लेने के बाद उसकी माँ उसे पाखाना साफ करने का आदेश देती है। उस संबंध में कहती है–''देख रे मोहन! तेरे मोह से मैं मेहतरानी तो गई हूँ पर रंडी किसी कीमत पर नहीं बनूंगी मेहतरानी को अपनी मरजाद होती है बाबूजी वह ईमानदारी का धंधा करके अपना पेट भर पाती है। रंडी भड़ुवे जैसे विचारों–करमों वाले लोग लुगाइयों में अपनी आप की वो कोमल नहीं होती जो हमारे मनों में है। हम अपने मन के मालिक है। बिकाऊ या लुटाऊ माल नहीं है मन का अहसास क्या कुछ कम होता है, बाबूजी।''

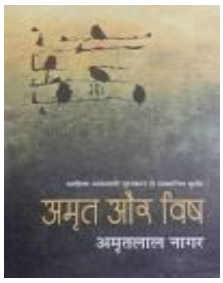

''अमृत और विष' में अनेक पात्र ऐसे हैं, जो आधुनिक समाज में अपनी छाप छोड़ते है। अरविंद शंकर एक उपन्यासकार के रूप में सामने आते हैं, तो उनके उपन्यास में रमेशचंद्र गौड़ और लच्छू जैसे पात्र भी आते हैं। वे सब चरित्र अपने जीवन का अलग–अलग रास्ता सुनकर समाज के विकास की दोनों दिशाओं को स्पष्ट करते हैं।

'मानस का हंस' 'खंजन नयन', एवं 'शतरंज के मोहरे' उपन्यासों में जिन ऐतिहासिक पात्रों के माध्यम से नागर जी ने उस समाज के अंतर्विरोधों को देखा है, वह अपने आप में एक महत्वपूर्ण कार्य है। 'तुलसीदास' और 'सूरदास' ने मध्यकालीन बोध को नये सिरे से देखा है। साथ ही मुगलकालीन भारत की सोती हुई आत्मा को झकझोरा है। महान परुषो की आध्यात्मिक छाप आज भी स्मरणीय है।

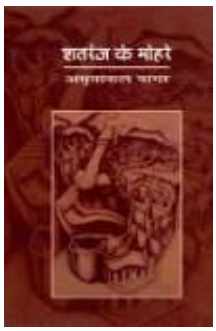

आधुनिक भारतीय समाज में अपनी छाप छोड़ने वाले नारी पात्रों में ताई, निर्गुनिया के बाद तीसरी महत्वपूर्ण पात्र है 'अग्निगर्भा' की 'सीता पाण्डे'। यह सीता, पढ़ी–लिखी लड़कियों की समस्याओं से अपने पाठकों को संपूर्णता से परिचित कराती है। वह एक मध् यवर्गीय परिवार को पढ़ी–लिखी लड़की होने के कारण सोचती है कि एक पढ़े–लिखे लड़के से विवाह हो जाये। अपनी सहेलियों के प्रेम विवाह को देखकर सीता सोचती है कि कितनी सौभाग्यशालिनी हैं। मित्रो हे राम, तुमने अपने जन्मदिन को ही कृपापूर्वक मेरा जन्मदिन भी बनाया है तो मुझे अभागी न बनाना। मुझे कुसुम जैसा कुबेरपति नहीं चाहिए। मित्रों जैसा भाग्य–काव्य होते हुए भी मेरे जैसा इष्ट नहीं। हाँ, जीवन साथी इसके जैसा हो विद्वान और सरल व्यक्ति देना, झोपड़ी में भी महलों से अधिक सुख पा लूंगी तुम्हारी कृपा से।'' महज सीता पाण्डे का दुर्भाग्य, कि उसे पति के नाम पर कलंक मिला है। एम.ए पी–एच.डी. तक पढ़ी लिखी होने पर भी सीता का पति रामेश्वर उसे दुधारू गाय समझता है। नागर जी इस तथ्य से परिचित हैं कि प्रेमचंद युग से लेकर छठे– सातवें दशक तक हिंदी कथा साहित्य में ये तथ्य बार–बार उठते रहे है। नारी को आर्थिक रूप से सुदृढ़ करके उसे शोषण से मुक्त किया जा सकता है। परंतु यह सही नहीं है। असल में सामंती संस्कार ही नारी को दुर्बल बना देती है।

इसी प्रकार 'सुहाग के नूपुर' में 'माधवी' वेश्या आधुनिक समाज से अपने पतिता और एकनिष्ठ प्रेम की मांग करती हुई दिखाई देती है। कुलवधू की मर्यादा को बचानेवाली 'कलागी' आधुनिक समाज की एक मार्गदर्शिका बन सकती है। उपन्यास ऐतिहासिक होने पर भी यह वर्तमान समाज को पाठ सिखानेवाला है।

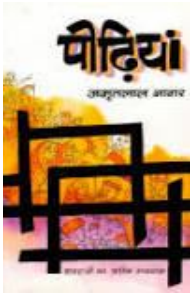

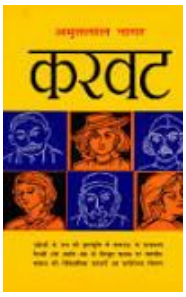

अमृतलाल नागर जी के अंतिम उपन्यास 'करवट' तथा 'पीढ़ियाँ' में चार पीढ़ियों की ऐतिहासिक परंपरा का मूल्यांकन है। शोषक अंग्रेजों को खुशामद करके 'रायबहादुर' की उपाधि हासिल करने वाले हिंदु–मुसलमान जातीय भेदभाव को नागर जी ने अत्यंत मनोयोग से चित्रित किया है। हाजी साहब के खानदान में कोई बादशाह नहीं रहा, वह वैसे ही रहे जैसे एक हिंदू रहता है। फिर भी अपने आप को एक बड़े नवाब के वंशज समझते हैं और हिंदुओं को दुत्कारते रहते हैं। हाजी साहब कहते हैं "ये आप गलत फरमा रहे हैं जनाबे आला आप बुतपरस्त कौम के हैं और हम बुतशिक्त कौम के। आप पूरब में सिर झुकाते हैं और हम पश्चिम में। हमारा आपका मेल हो ही नहीं सकता । लार्ड मिन्टों ने सेपरेट– इलेक्टोरेट चलाकर बहुत अच्छा किया ।''

इस प्रकार नागर जी ने अपने उपन्यास में पात्रों के माध्यम से आधुनिक नये समाज को किसी–न–किसी प्रकार से समझाने का प्रयास किया है। उनके पात्र सामाजिक, ऐतिहासिक या राजनितिक हों पर उनका लक्ष्य मात्र वर्तमान समाज का मार्गदर्शन करना है। उनसे समाज सीखता भी जरूर है।

संदर्भ ग्रंथ

- नागर अमृतलाल, महाकाल, प्रकाशक–गुरूदत्त साहित्य, प्रकाशन वर्ष – 2007,पृ.सं. 140 व 164
- नागर अमृतलाल, बूंद और समुद्र, प्रकाशक –राजकमल, प्रकाशन वर्ष – 2006, पृ.सं. 91
- नागर अमृतलाल, नाच्यौ बहुत गोपाल, प्रकाशक–राजपाल एंड सन्स, प्रकाशन वर्ष 2014, पृ.सं. 334–335
- नागर अमृतलाल,अग्निगर्भा, प्रकाशक–राधाकृष्ण, प्रकाशन वर्ष –2014,पृ.सं. 14
- नागर अमृतलाल, पीढ़ियां, प्रकाशक – राधाकृष्ण, प्रकाशन वर्ष–2001, पृ.सं. 144
- शर्मा, डॉ. रामविलास, आस्था के सौंदर्य, प्रकाशक–राजकमल, प्रकाशन वर्ष–2002, पृ.सं. 135